छत्तीसगढ़ के विमुक्त अनुसूचित जाति नट एवं उनके खेल-तमाशा का नृजातिवृतांतात्मक अध्ययन

हेमन्त कुमार[1]
डॉ.जितेन्द्र कुमार प्रेमी[2]
[1]**शोधछात्र,** मानवविज्ञान अध्ययनशाला, पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
[2]**ऐसोसिएट प्रोफेसर,** मानवविज्ञान अध्ययनशाला, पं.रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर (छ.ग.)
Email ID: joshi9926124815@gmail.com, Email ID: jitendra_rsu@yahoo.co.in
M.N.-8103866976, 9399838938

सारांश:-

निम्न आलेख ''छत्तीसगढ़ के विमुक्त अनुसूचित जाति नट एवं उनके खेल-तमाशा का नृजातिवृतांतात्मक अध्ययन'' पर आधारित है। निम्न अध्ययन का उददेश्य नृजाति समूह 'नट' के सामाजिक-आर्थिक, राजनैतिक एवं शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन करने के साथ-साथ नृजाति समूह 'नट' के खेल-तमाशा पर आधुनिकता के प्रभाव का अध्ययन करना था। 'नट' संस्कृत शब्द के 'नाट' से लिया गया शब्द है जो न+ट दो शब्दों से मिलकर बना है। जिसका अर्थ नृत्य, नाटक अथवा अभिनय करना रहा है। नृजाति समूह 'नट' को छत्तीसगढ़ राज्य में "डंगचगहा'' के नाम से पहचाना (जाना) जाता है। "डंगचगहा'' शब्द मुख्य रूप से दो शब्द डंग+चगहा से मिलकर बना है। 'डंग' का अर्थ "बाँस'' से है और "चगहा'' का अर्थ "चढ़ना'' से है अर्थात् बाँस के सहारे रस्सी पर चढ़कर विभिन्न प्रकार के खेल-तमाशा, करतब दिखाने से है। **भारत सरकार की जनगणना 2011**[1] के अनुसार नट, कालबेलिया, सपेरा, नवदिगार, कुबुतर की कुल जनसंख्या 486058 थी। **NCDNST, 2008**[2] के अनुसार दक्षिण एशिया में विश्व के सर्वाधिक घुमन्तु/अर्धघुमन्तु नृजाति समूह निवास करती है। जिसमें से लगभग पाँच सौ प्रकार के विमुक्त घुमन्तु/अर्धघुमन्तु आपराधिक जाति-जनजाति भारत में निवास करती है जो भारत की जनसंख्या का सात प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करता है। प्रस्तुत अध्ययन से पता चलता है कि छत्तीसगढ़ के विमुक्त घुमन्तु/अर्धघुमन्तु 'नट' जाति का सामाजिक-आर्थिक, राजनैतिक एवं शैक्षणिक स्थिति अन्य जाति समूहों के अपेक्षा निम्न स्तर पर है। नृजाति समूह 'नट' के खेल-तमाशा पर आधुनिकता का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। पहले 'नट' जाति में खेल-तमाशा परम्परागत रूप से ढ़ोल, थाली, डमरू, कुत्ता, बन्दर इत्यादि के माध्यम से खेल-तमाशा करते थे। लेकिन वर्तमान समय में आधुनिक साऊड बॉक्स, नवीन गीत-संगीत के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के नवीन खेल-तमाशा, सर्कस करने लगा है। अर्थात् नृजाति समूह 'नट' अपनी परम्परागत खेल-तमाशा को धीरे-धीरे बिसराने (भूलने) लगा है।

कुंजीशब्द:- छत्तीसगढ़, नृजाति समूह नट, विमुक्त घुमन्तु/अर्धघुमन्तु जाति, खेल-तमाशा।

प्रस्तावना:- भारत विभिन्नताओं का राष्ट्र है। विभिन्नताओं से भरा राष्ट्र का निर्माण विभिन्न प्रकारों के भाषा-बोली के आधार पर किया गया है। जैसे मराठी भाषा-बोली बोलने के कारण महाराष्ट्र, तेलगू बोलने के कारण आन्धप्रदेश, तेलंगाना उसी प्रकार से छत्तीसगढ़ही बोली बोलने के कारण छत्तीसगढ़ राज्य को छत्तीसगढ़ के नाम से जाना जाता है। छत्तीसगढ राज्य अपनी राज्य सम्पदा खनिज, लौह, धान, जाति-जनजाति, घुमन्तु/अर्धघुमन्तु जाति-जनजाति, रीति-रिवाज, परम्पराओं इत्यादि के लिए अन्य राज्यों से भिन्नता रखते हुये अपना अलग पहचान रखता है। छत्तीसगढ राज्य में लगभग 42 प्रकार के जनजातियाँ निवास करती है, जिनमें से 7 प्रकार के विशेष पिछड़ी जनजाति भी शामिल है। इस जाति-जनजातियों की श्रेणी में विमुक्त घुमन्तु/अर्धघुमन्तु 'नट' (डंगचगहा) जाति भी छत्तीसगढ़ राज्य के लगभग 13 जिलों (रायपुर, जांजगीर-चांपा, मुंगेली, बिलासपुर, बेमेतरा, कबीरधाम, नांदगांव, दुर्ग, महासमुंद, बलौदाबाजार, रायगढ़, धमतरी, बालौद) में निवासरत है।

नृजाति समूह 'नट' जिसे घुमन्तु/अर्धघुमन्तु आपराधिक जाति-जनजाति, खानाबदोस जीवन जीने वाला भारत के अत्यन्त प्राचीन जाति के रूप में जाना जाता है। इसका मुख्य कार्य विभिन्न प्रकार के कलाबाजी, खेल-तमाशा, भिच्छावृत्ती के साथ-साथ जड़ी-बूटी, ताबीज बेचना भी है। प्रारम्भ में इस नृजाति समूह को जनजातियों के श्रेणी में गिना जाता था। लेकिन वर्तमान समय में इसे छत्तीसगढ़ राज्य में अनुसूचित जाति के अन्तर्गत शामिल किया गया है और इसी के आधार पर इसे सरकारी योजनाओं का लाभ मिलने लगा है। छत्तीसगढ़ राज्य में 'नट' जाति को घुमन्तु/अर्धघुमन्तु विमुक्त जाति के रूप में जाना जाता है। घुमन्तु विमुक्त जाति-जनजाति क्या है? घुमन्तु एवं विमुक्त जाति-जनजाति को अग्रेंजी में नोमाडिक ट्राईब्स कहते है और आपराधिक जाति-जनजाति को डी-नोटीफाईड ट्राईब्स कहते है। वर्ष 1952 को आपराधिक जनजाति का नाम बदलकर डी-नोटीफाईड किया गया। अर्थात् विमुक्त आपराधिक कानून से मुक्त होना या किया गया। तब से लेकर वर्तमान समय तक 'नट' जाति एक गाँव से दूसरे गाँव, एक शहर से दूसरे शहर घुम-घुम कर अपनी शारीरिक कलाबाजी, खेल-तमाशा दिखाते हुये अपना जीवन निर्वाह कर रहा है। नृजाति समूह खेल-तमाशा के साथ-साथ भिच्छावृत्ती, जड़ी-बूटी, ताबीज बनाकर बेचने के साथ-साथ वर्तमान समय में जो नृजाति समूह स्थायी रूप से बस (निवास) गये है वह अब कृषि, मजदूरी एवं व्यापार भी करने लगा है। जिसके कारण से बहुत से नृजाति समूह 'नट' अपने पैतृक कार्य खेल-तमाशा, कलाबाजी, सर्कस दिखाने के कला को भूलने लगा है। वहीं जो नवीन युवावर्ग खेल-तमाशा दिखा भी रहे है तो वह अपनी पैतृक खेल-तमाशा में नवीन बदलाव/परिवर्तन कर विभिन्न प्रकार के खेल-तमाशा नवीन आधुनिक साऊड बॉक्स, गीत-संगीत, हाथ की सफाई (जादू) करतब का प्रयोग करते हुये खेल-तमाशा दिखा रहे है। नृजाति समूह 'नट' में युवावर्ग अन्य समाजों के बीच अत्यधिक सम्पर्क में आने (रहने) के कारण वह उनकी तरह उनके सांरकृतियों को अपनाने लगा है। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण हमें 'नट' समाज के बच्चों पर देखने को मिल जायेगा। वर्तमान समय में बहुत से 'नट' समाज के बच्चे अपने पैतृक खेल-तमाशा, भिच्छावृत्ती के कार्य को करने से संकोच (शरमाते) करने लगा है। वह दूसरे बच्चों के सामान पहनावा कपड़ा, रहन-सहन, खान-पान, बोलचाल, शिक्षा, रोजगार को प्राप्त करने का प्रयाय करने लगा है। इस प्रयास के परिणाम स्वरूप ही आज 'नट' समाज के बहुत से बच्चे अब उच्च शिक्षा लेकर कोई शिक्षाकर्मी है तो कोई पुलिस, सैनिक तो कुछ युवावर्ग अपनी खुद के व्यापार भी करने लगा है। छत्तीसगढ़ राज्य के नृजाति समूह 'नट' वर्तमान समय में हिन्दूओं के अत्यधिक सम्पर्क में आने या रहने के कारण वह अब लगभग पूर्ण रूप से हिन्दू धर्म को मानने लगा है या यू कहे की यह अपने आप को हिन्दू मानने लगा है। वह अब हिन्दू धर्म के देवी-देवताओं की पूजा-पाठ, तीज-त्यौहार को भी मनाने लगा है। हालांकि हिन्दू धर्म के लोग इनके साथ आज भी कही न कही अस्पृश्यता जैसे व्यवहार करते है। आज भी बहुत से हिन्दू लोग इनके हाथों से दिया हुआ खाना, खाना पंसद नहीं करते और गांवों में दूसरे जाति के लोग इसे अपने साथ बैठाकर खाना-पिलाना भी पंसद नही करते। यदि गांव में किसी दूसरे जाति के यहा खाना के लिए निमंत्रण दिया भी जाता है तो इसे अलग से सूखा चावल, दाल, सब्जी पकाने के लिए दिया जाता है। वह अपने हाथों से अपने बर्तन में या अलग से दिये हुये बर्तनों में अलग से चूल्हा में बनाकर (पका) खाते है। इसे आज भी अस्पृश्य, आपराधिक जाति के रूप में देखते है या मानते है। इसी के परिणाम स्वरूप नृजाति समूह 'नट' आज भी गांव/शहरों में मुख्य गांव से कुछ दूर अपना 'डेरा' (निवास) बनाते या लगाते है। और नृजाति समूह अपने सामाजिक नियमों का पालन करते हुये जीवन गुजार रहे है।

नृजाति समूह 'नट' छत्तीसगढ़ राज्य के लगभग 13 जिलों में निवासरत है। सन 1930 में "डॉ. बाबासाहेब अंबेडकर ने अपने 'हु वेअर अनटचेबल' ग्रंथ में विमुक्त आपराधिक जनजातियों की जनसंख्या 50 लाख बताई है। (**धारासुरे 2020, पृ. 25**)[3]'' **सामाजिक जनगणना 2014**[4] के अनुसार नट, कालबेलिया, सपेरा, नवदिगार एवं कुबुतर की कुल जनसंख्या 486058 थी। **NCDNST, 2008** के अनुसार भारत में लगभग पाँच सौ प्रकार के विमुक्त घुमन्तु/अर्धघुमन्तु जाति-जनजाति निवास करती है जो भारत की जनसंख्या का सात प्रतिशत का प्रतिनिधित्व करता है। भारत में सात प्रतिशत जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करने वाला जाति-जनजाति आज तक विमुक्त घुमन्तु/अर्धघुमन्तु जाति-जनजाति के रूप जाना जाता है क्यों? वर्तमान समय में भी अन्य जाति-जनजातियों से भी क्यों पिछड़ा हुआ हैं? देश के कुल जनसंख्या का 7 प्रतिशत भाग का प्रतिनिधित्व करने

वालों का एक भी जनप्रतिनिधि किसी आयोग में सदस्य, मंडल, नेता, सांसद, विधायक क्यों नहीं हैं? घुमन्तु जाति-जनजाति लगभग सभी क्षेत्रों में अति पिछड़ा हुआ है तो क्यों नही इन्हे विशेष आरक्षण, अलग से आयोग क्यों नहीं बना हैं? इत्यादि जैसे प्रश्नों को हम देखे तो पता चलता है कि नृजाति समूह के सामाजिक-आर्थिक, राजनैतिक एवं शैक्षणिक स्तर निम्न होने के पीछे कहीं न कहीं हमारी सरकार एवं सरकार के प्रतिनिधि नेता, कानून, कर्मचारी के साथ-साथ खुद नृजाति समूह भी कहीं न कहीं जिम्मेदार दिखाई पड़ता है। वर्तमान समय में सरकार नृजाति समूह 'नट' को छत्तीसगढ़ राज्य में अनुसूचित जाति वर्ग के अन्तर्गत शामिल कर आरक्षण का लाभ दे रहा है। लेकिन नृजाति समूह में शिक्षा का स्तर बहुत ही निम्न होने के कारण से बहुत से नृजाति समूह सरकारी योजनाओं का लाभ लेने से वंचित रह जाते है। वर्तमान समय में शैक्षणिक स्तर का निम्न होने के लिए ऐ खुद जिम्मेदार है मालूम पड़ता है क्योकि ऐ लोग अपने छोटे-छोटे बच्चों को स्कूल जाने के समय में इन्हें खेल-तमाशा, करतब, सर्कस दिखाने के लिए अपने साथ दूसरे प्रदेश ले जाते है। नृजाति समूह में माता-पिता अपने छोटे बच्चों का उपयोग लगभग 05-14 वर्ष के आयु तक के बच्चों का उपयोग खेल-तमाशा के लिए करते है। फिर बच्चों का 14-16 साल के कम आयु में ही अधिकांश का शादी कर देते है। इस तरह से वह बच्चा पढ़ नही पाता है। सरकार एवं सरकार के जन प्रतिनिधि नेता विधायक चुनाव के समय इनके लिए बड़े-बड़े लुभावने वादा जैसे नृजाति समूह के लिए अलग से आयोग बनाया जायेगा, विशेष आरक्षण दिलाया जायेगा, सामाजिक-आर्थिक, राजनैतिक एवं शैक्षणिक विकास के लिए विधानसभा राज्यसभा में नृजाति समूह का प्रतिनिधि होगा जो नृजाति समूह का प्रतिनिधित्व करेगा इत्यादि वादा करते है और चुनाव के बाद किये गये वादा को भूल जाता है या वादा से मुकर जाता है। इस कारण से नृजाति समूह के लोगों में राजनैतिक नेता, सरकारी प्रतिनिधि, कर्मचारियों के ऊपर से विश्वास उठ चूका है। और कुछ नृजाति समूह के लोग चुनाव के समय वोट देने भी नही जाते है। इस तरह से नृजाति समूह खुद एवं सरकारी प्रतिनिधि कहीं न कहीं नृजाति समूह के पिछड़े पन के लिए जिम्मेदार है।

विमुक्त घुमन्तु/अर्धघुमन्तु जाति-जनजातियों की वर्गों को देखे तो यह अनेक वर्गों में बटा हुआ हैं। जिसकी परिपूर्ण जानकारी हमारे सरकार के पास भी नहीं है न जानकारी लेने का सामाजिक कर्तब्य भी आज तक किसी सरकार ने पूरा नहीं किया है। ऐ सिर्फ अपने हित के लिए मतदाता सूची में विमुक्त घुमन्तु/अर्धघुमन्तु जाति-जनजातियों को जोड़ा है। जिनमें उनका राजनीतिक स्वार्थ है। (**धारासुरे, 2020 पृ.25**) छत्तीसगढ़ राज्य के विमुक्त घुमन्तु/अर्धघुमन्तु जाति-जनजातियों की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं शैक्षणिक स्थिति की सही मायने में देखे तो आज भी मुख्य विमुक्त घुमन्तु/अर्धघुमन्तु समूहों की जीवन स्थिति बहुत ही दयनीय स्थिति में है। इनकी दयनीय स्थिति को सुधारने के लिए आरक्षण का लाभ सर्वप्रथम इस वर्ग को दिलाने के लिए कार्य करना चाहिए।

सामाजिक-आर्थिक स्थिति छत्तीसगढ़ राज्य जो अपनी विमुक्त घुमन्तु/अर्धघुमन्तु जाति-जनजाति एवं सांस्कृतिक विभिन्नताओं के लिए जाने जाते है। यहाँ अनेक प्रकार के घुमन्तु/अर्धघुमन्तु जाति-जनजातियाँ जो जंगलों, पहाड़ो, मैदानी, ग्रामीण, शहरी क्षेत्रों में निवासरत है। 'नट' जाति प्रमुख रूप से अर्धघुमन्तु जाति है। जिनका जीवन हमेशा एक स्थान से दूसरे स्थान भटकते हुये चल रहा है। इस भटकन के कारण इसे घुमन्तु/अर्धघुमन्तु जाति के नाम से जानते है। दूसरे स्थान पर भटकना इनका मजबूरी भी है क्योकि इनकी सामाजिक-आर्थिक स्थिति बहुत ही दयनीय है। किसी कारण वंश जिस दिन खेल-तमाशा नही दिखा पाते उस दिन कभी कभार भूखे पेट ही सोना पड़ता है। न इनके पास खुद के कृषि जमीन है न खुद के व्यापार। इनके पास मात्र इनकी परम्परागत व्यवसाय खेल-तमाशा, भिच्छावृत्ती है जिसके सहारे यह अपना और अपने परिवार के पालन पोषण करते आ रहे है। देखा जाये तो 'नट' जाति अन्य जाति समूहों के सामाजिक-आर्थिक, राजनीतिक एवं शैक्षणिक रूप से बहुत पिछड़ा हुआ है।

नट जाति का क्षेत्र एवं निवास:- छत्तीसगढ़ राज्य में 'नट' जाति मुख्य रूप से जांजगीर-चांपा, बिलासपुर, मुगेली, रायपुर, धमतरी, बेमेतरा, कबीरधाम, कर्वधा, नांदगांव, दुर्ग, महासमुंद, बलौदाबाजार, रायगढ़, बालौद इत्यादि जिलों में निवासरत है। तो वही (**निरगुणे, 2017 पृ.70-71**)[5] के अनुसार 'नट' नृजाति समूह सम्पूर्ण उत्तर भारत में खासकर पश्चिम भारत में निवास करते है। राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात, मध्यप्रदेश एवं छत्तीसगढ़ राज्य को नटों का गढ़ कहाँ जाता है। राजस्थान के कलंदर जाति को मूलतः

नट ही मानते है। उसी प्रकार के गुजरात में 'थाउस' एवं महाराष्ट्र में 'गोड़ हाली' जो 'नट' का काम करते है। इनके निवास मुख्यता बाँस और कपड़ो से बना रहता है। तथा कुछ वर्तमान समय में त्रिपाल से अपना झोपड़ी, डेरा बनाने लगा है। ऐ अधिकांश रूप से 5-10 लोगों का समूहों में निवास करते है जो एक-एक सूत्र में बँधे रहते है। किसी पर विपत्ति आने पर ऐ एक-दूसरे की मंदत के लिए हमेशा समूह में अपना डेरा निवास डालते या बनाते है। प्रस्तुत अध्ययन के दौरान देखा गया है कि वर्तमान समय में बहुत से 'नट' जाति अर्धघुमन्तु में बदल गये है। वह अब छत्तीसगढ़ में अपना स्थायी निवास बनाकर रहने लगा है। वह कुछ माह समय के लिए खेल-तमाशा, भिच्छावृत्ती के लिए दूसरे प्रदेश जाते है और कुछ माह बाद अपना स्थायी निवास गांव में वापस आ जाते है। और पुनः कुछ माह आराम करने के बाद खेल-तमाशा दिखाने के लिए (युवावर्ग, शादीशुदा महिला पुरूष) चले जाते है जो वृद्ध या शिक्षा ग्रहण कर रहे है वहीं मात्र स्थायी निवास गांव में रहता है जो छोटा-मोटा दुकान या सुवर, बकरी, मुर्गी-मुर्गा पालन करते हुये घरों का देख भाल करते हुये अपना जीवन बसर कर रहे है।

शारीरिक बनावट एवं वस्त्र विन्यास:- नृजाति समूह 'नट' का शारीरिक बनावट मुख्यता चुस्त-दुरूस्त, फुर्तीला, अत्यधिक लचीला और शारीरिक रूप से मजबूत होता है। छत्तीसगढ़ राज्य में निवासरत 'नट' जाति अन्य जाति-जनजातियों से मिलता जूलता प्रायः सांवला, काला, तीक्ष्ण नाक, काले लम्बे बाल (केस) मुलायम, कान मध्यम, आँख सामान्य, पुतली काला, भौव काला, हाथ-पैर एवं उँगली सामान्य, कद-काठी मध्यम, पुरे शरीर पर हल्का काला भुरे बाल पाया जाता है। पुरूष सिर के बालों को हमारे तरह सामान्य तौर से कंघी करते है वहीं महिलाओं में एक चोटी रहता है तो छोटे बच्चे व कुवारी लड़कियों का बाल दो चोटी कंघी किये हुये मिल जायेंगा। महिलाये पुरूषों की अपेक्षा अधिक चुस्त फुरर्त, सुडौल, सुदृढ़ और सुन्दर होते है। छोटे बच्चों (लडकी, लड़का) को बचपन से ही खेल-तमाशा (डांग) चढ़ने की अभ्यास कराया जाता है और वह उस कला में पारंगत हो जाये रहता है। छोटे लड़की-लड़का खेल-तमाशा दिखाते है तो वहीं बडे पुरूष ढ़ोल थाली बजाने के साथ-साथ साऊड बॉक्स के माध्यम से दर्शकों को सम्बोधन करते रहता है।

वस्त्र विन्यास में पुरूष मुख्यता पैट-शर्ट, कमीज, लुंगी, धोती, सिर पर साफा बाँधे रहता है तो वहीं युवावर्ग वर्तमान समय में टी-शर्ट, जींस, केफरी, पैट-शल्ट के साथ बेल्ट, चश्मा, घंडी, अंगुठी, बाली पहनने के साथ-साथ मोबाईल फोन भी रखने (पकड़ने) लगा है। नृजाति समूह नट में शादी के समय पुरूष (वर) का वस्त्र मुख्य रूप से सफेद पैट शर्ट हुआ करता था लेकिन वर्तमान समय में अब सामान्य कोई भी कलर का पैंट, शर्ट, जींस पहनने लगा है तो वही महिलाओं में शादी के समय सामान्य लाल, गुलाबी, पीला साड़ी पहनते है। महिलाए सामान्य दिनचर्या के समय साड़ी, ब्लाऊज, लहंगा, पेटीकोट पहनते है तो वहीं छोटी लड़की या कुवारी लड़की सलवार सूट, कमीज, कुरती, घाघरा, टी- शर्ट, जींस, फ्रॉक इत्यादि पहनते है। नृजाति समूह में अधिकांश लोग प्रायः नंगे पैर चलते है। खासकर अपने डेरा/घर में बाकी समय चप्पल, जूता एवं सेन्डील का उपयोग करते है। (**निरगुणे, 2017**)

परिवारिक संरचना एवं नृजाति पंचायत:- नृजाति समूह में अधिकांश रूप से एकल परिवार का प्रचलन अधिक है। विवाह के पश्चात् लड़का/पुत्र अपना अलग से निवास/डेरा बनाकर अपने परिवार के साथ अलग खाने लगता है। प्रस्तुत अध्ययन में पाया गया की जब स्थायी मकान/घर बड़ा हो तो वह किसी एक कमरा में अपने परिवार के साथ रहते हुये अलग से चूल्हा जलाकर खाता है। लेकिन परिवार बड़ा हो और मकान छोटा तो उस स्थिति में अपने माता-पिता, भैय्या-भाभी, बहन-दमाद अन्य रिश्तेदार के घर के निकट अपना नया घर/डेरा बनाकर अलग रहने लगता है। 'नट' जाति में वंश परम्परा पितृसत्ता का प्रचलन है तथा परिवार का मुखिया बड़े पुरूष होते है। पिता की सम्पत्ति बेटा को मिलता है। किन्तु परिवार में बेटा/पुत्र न हो तो उस स्थिति में परिवार की संपत्ति लड़की को मिलता है।

नृजाति समूह में जाति पंचायत का मुखिया वृद्ध पुरूष या समझदार शादीशुदा 40-60 वर्ष के आयु वर्ग के पुरूष होता है। छत्तीसगढ़ के 'नट' जाति समूह में 12 गांव का एक पाली अर्थात् बारापाली का एक मुखिया होता है, जिसका चुनाव सर्वसम्मति से होता है। इनके सहयोग के लिए चार पंच का चुनाव भी सर्वसम्मति से होता है। लेकिन प्रत्येक गांव में भी नृजाति

समूह का मुखिया भी पारा/मोहल्ला अनुसार जितना पारा/मोहल्ला होगा या होता है, उतना मुखिया पारा/मोहल्ला का रहता है। इनका चुनाव गांव एवं पारा के सदस्यों के द्वारा सर्वसम्मति से किया जाता है। नृजाति समूह में किसी सामाजिक समस्या, परिवारिक विवाद, व्यक्ति विशेष विवाद इत्यादि सामाजिक समस्या का निराकरण गांव/पारा/मोहल्ला एवं बारापाली के मुखिया मिलकर नृजाति पंचायत में करते है। 'नट' जाति में अधिकांश सामाजिक समस्या, विवादों का निपटारा/फैसला जाति पंचायत में ही हो जाता है। बहुत कम ही विवाद या समस्या को लेकर नृजाति व्यक्ति/समूह थाना-कचहरी तक जाते है। यह अलग बाद है की किसी बड़े विवाद या समस्या हो तो ही नृजाति समूह के लोग थाना-कचहरी तक जाते है। इनकी पंचायत बहुत सक्त होता है। मुखिया का निर्णय सर्वमान्य रूप से मान्य होता है जो नहीं मानता है उसे समाज बिरादरी से बाहर सामाजिक बहिष्कृत कर देते है। जब उसको दिये गये करार, सजा को मानने को तैयार हो जाता है तो उस परिवार/व्यक्ति को पुनः समाज में मिला लिया जाता है।

धार्मिक क्रियाकलाप:- "नृजाति समूह 'नट' अपने धार्मिक देवी-देवताओं के प्रति अत्यधिक विश्वास रखते है। नृजाति समूह में कोई भी सामाजिक परिवारिक एवं धार्मिक कार्य करने से पूर्व (पहले) अपने ईष्ट देवी-देवताओं की पूजा-पाठ पहले करता है फिर काम चालू (प्रारम्भ) करता है। इनका मानना है कि ऐसा करने से देवी-देवता प्रसन्न रहता है और कार्य सही रूप से सफल होता है। नृजाति समूह द्वारा अपने ईष्ट देवी-देवताओं के रूप में मुख्यता चार पूर्वजों (दादो) दादो फरसराम, दादो बकतो, दादो फिरतु एवं दादो घासीदास को मानता है और इनकी पूजा-पाठ करता है। **(नट,2021)**[9]" छत्तीसगढ़ राज्य के अर्धघुमन्तु नृजाति समूह 'नटों' के स्थायी घरों पर प्रायः प्रत्येक घर के आंगन में पूर्वजों के प्रतीक के रूप में एक चबुतरा बना रहता है। इस चबुतरा में त्रिकोण आकार के लाल एवं सफेद रंग के झण्ड़ा लगा रहता है। खडकवाहनी एवं बुडीमाता के झण्ड़ा प्रायः लाल रंग का रहता है तो वहीं सटवाई माता का झण्ड़ा प्रायः सफेद रंग का रहता है। लेकिन प्रस्तुत अध्ययन के दौरान कहीं-कहीं पर वर्तमान समय पर खडकवाहनी एवं बुड़ीमाता के झण्ड़ा सफेद रंग का तो सटवाई माता का झण्ड़ा लाल रंग का भी देखने को मिला है। झण्ड़ा पुराना या फट जाने पर वर्ष में एक बार या 3 साल में तीलसल्ला पूजा-पाठ विधि-विधान से करते हुये खैरा बकरा, बकरी, मुर्गा बलि देकर झण्ड़ा बदला या नया लगाया जाता है। पूजा के लिए नारियल, अगरबत्ती, घी, तेल, धूप, बन्दन, दूबीघास, दूध, चावल, चावल आटा/गेहूँ आटा, गुड़, शराब, दीया, नया झण्ड़ा, बाँस के नया डण्ड़ा, बलि देने के लिए चाकू, तीन मिट्टी के नया ईट या मिट्टी के ढेला, नया बाँस के टोकरी, लाल या सफेद कलर के नया कपड़ा 1-2 मीटर के, मौलीधागा, मिट्टी के बड़ा दीया, लोटा या गिलास, थाली काँच या स्टील के, गांजा/तम्बाकू, चाँदी/सोना के अंगुठी, शुद्वीकरण के लिए अलग गोत्र के एक व्यक्ति, लकड़ी के बॉक्स/सन्दूक (देवखाटली) इत्यादि की जरूरत पड़ती है। वर्तमान समय में नृजाति समूह अन्य जाति-जनजातियों के अधिक सम्पर्क में आने के कारण वह दूसरे धर्मों के देवी-देवताओं के पूजा-पाठ के साथ-साथ उनके तीज-त्यौहार को भी मानने लगा है। नृजाति समूह के अधिकांश घरों में ईष्टदेवी देवताओं के साथ अन्य देवी-देवताओं जैसे- बूड़ीमाता, शंकर, विष्णु, दुर्गा, हनुमान, काली, लक्ष्मी, संतोषी, प्रभु यीशु इत्यादि के आराधना/पूजा-पाठ करते है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में फैले विमुक्त घुमन्तु/अर्धघुमन्तु जाति-जनजाति में से कुछ विमुक्त जाति 'नट' मुस्लिम धर्म को भी मानते है वह मुस्लिम रीति-रिवाज अनुसार अपना जीवन निर्वाह कर रहे है, वे मुस्लिम नट कहलाते है।

नृजाति समूह में कोई पितर (श्राद्ध) नही मानते लेकिन मरे हुये वंशजों को देवता मानकर उनका पूजा-पाठ करते है। नृजाति समूह मरे हुये वंश के लोगों को तीन साल में तीलसल्ला पूजा-पाठ कर मिलाते है। तब से मरे हुये वंश के लोग देवता बन जाता है। और उनकी पूजा-पाठ करता है। नृजाति समूह में कोई भी काम तीज-त्यौहार, उत्सव होता है या मनाने से पहले वह अपने पूर्वजों के क्रब में जाकर बन्दन, दीया, अगरबत्ती एवं शराब तरपते (लगाते) है। अधिकांश देवी-देवताओं की पूजा-पाठ कार्तिकमास के एकादशी (देवउठनी) के दिन करते हुये उसे उत्सव के रूप में मनाते है। नृजाति समूह 'नट' के कोई विशेष त्यौहार, उत्सव, पर्व खुद की नही है। वह वर्तमान समय में पूर्ण रूप से हिन्दू देवी-देवताओं के पूजा-पाठ के साथ-साथ उनके तीज-त्यौहार को भी मानते है। या यू कहे की नृजाति समूह 'नट' पूर्ण रूप से हिन्दू हो गया है वह अपने आप को हिन्दू कहते है और इनही के अनुसार विवाह एवं मृत्यु संरकार का कार्यक्रम भी करते है। हालांकि इनके विवाह एवं मृत्यु संस्कार के क्रिया क्रम में कुछ अन्तर

है। विवाह का कार्यक्रम पूर्ण रूप से लड़की के यहाँ लड़का वाले बारात लेकर जाने के बाद लड़की के गांव में ही मंडप लगा कर सभी रीति-रिवाज तेल हल्दी का कार्यक्रम करते है। वहीं मृत्यु में दसगात्र का चलन है उस दिन तीन बकरा बलि के रूप में दिया जाता है। पुरे नृजाति समाज को बकरा भात खिलाते है। लेकिन वर्तमान समय में कुछ 'नट' परिवार में बकरा भात के स्थान पर सादा दाल भात, सब्जी, खीर पूरी खिलाते है।

उत्पत्ति संबंधी मिथक:- नृजाति समूह 'नट' (डंगचगहा) के उत्पत्ति संबंधी न कोई लेख है न कोई इतिहास है। अर्थात् 'नट' जाति की उत्पत्ति इतिहास तथ्यों के आधार पर निश्चित करना संभव नही है। किंवदंती के अनुसार आज से लगभग 310 से 335 ई. में चन्द्रगुप्त के काल में चन्द्रगुप्त अपने दरबार में 'नटों' को गीत-संगीत मंनोरजन करने के लिए रखा था या रखते थे। इससे पूर्व 'नट' जाति के लोग जंगल में रहते थे, जंगलों में जंगली जानवरों के आक्रमण से बचने के लिए पुरा मोहल्ला/डेरा के लोंग एक जगह एकत्र होकर ढ़ोल बजाते हुये विभिन्न प्रकार के करतब करते हुये आग जलाकर रात व्यतीत किया करते थे। इससे पूरी रात गीत-संगीत करते हुये व्यतीत भी हो जाता था और जंगली जानवरों से सुरक्षित भी रह जाते थे। धीरे-धीरे ढ़ोल बजाने और डांग चढ़ने का अभ्यास होता चला गया तो इसे मैदानी इलाको में भरण-पोषण का साधन बना लिया जो आगे चलकर कलाबाजी, खेल-तमाशा दिखाने के कारण इनका नाम 'नट' (डंगचगहा) पड़ा। **निरगुणे, 2017 पृ.73-74**[6] के अनुसार "नट अपने आप को गोंड जनजाति की उपशाखा मानते है। इनमें गोत्र मरावी, नेताम, वायका या उईके इत्यादि होते है। तथा बादी भी गोंड की उपशाखा है जो गोदना गोदने का कार्य के साथ-साथ खेल-तमाशा रस्सी पर चलने, नृत्य करने का काम भी करते है।''

खेल-तमाशा के प्रकार:- नृजाति समूह 'नट' द्वारा वर्तमान समय में दिखाये जाने वाला खेल-तमाशा के प्रकार में मुख्य रूप से दो बाँस के बीच रस्सी बाँधकर खाली पैर रस्सी पर हाथ में 5-6 फिट बाँस या डण्डा लेकर चलना, सायकल रिंग से रस्सी पर चलना, सायकल रिंग में आग लगा कर सिर में रिंग को गोल घुमाते हुये चलना, रस्सी पर सो जाना, रस्सी पर खाली पैर रस्सी को आगे-पीछे जोर से हिलाना, रस्सी पर आग लगा कर गोला चलाना, रससी पर चप्पल पहन कर चलना, रस्सी पर आगे-पीछे चलना, पैर पर थाली लगा कर रस्सी पर चलना, चश्मा पहन कर रस्सी पर चलना, सिर में 5-10 लोटा लेकर रस्सी पर चलना, दोनो घुटना पर थाली लगाकर रस्सी पर चलना, खेल के जगह जमीन पर आगे-पीछे सीधा-उल्टा पलटना, जीफ के सहारे जमीन पर पड़े सुई को उल्टा होकर उठाना, सीने पर बड़ा से पत्थर रखकर घन के माध्यम से फोड़ना, 5-6 फिट के लम्बे छड़ (रिंग) को गल्ले के माध्यम से मोड़ना, ताश के पत्ते पर हाथ की सफाई दिखाना, गीत-संगीत पर ढ़ोल बजाते हुये डांस करना इत्यादि प्रकार के खेल-तमाशा, करतब नृजाति समूह 'नट' द्वारा किया/दिखाया जाता है।

अध्ययन के उददेश्य:- प्रसतुत अध्ययन "छत्तीसगढ़ के विमुक्त अनुसूचित जाति नट एवं उनके खेल-तमाशा का नृजातिवृतांतात्मक अध्ययन'' पर आधारित है। जिसका प्रमुख उददेश्य निम्न लिखित है- (1) नृजाति समूह नट के सामाजिक-आर्थिक, शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन करना। (2) नृजाति समूह नट के खेल-तमाशा पर आधुनिकता के प्रभाव का अध्ययन करना रहा है।

शोध प्रविधि:- यह अध्ययन पूर्ण रूप से जहाँ एक ओर से गुणात्मक एवं वर्णात्मक शोध है तो वहीं दूसरी ओर से व्यावहारिक और प्राविधिक रूप से नृजातिवृतांतात्मक अध्ययन भी है। नृजातिवृतांतात्मक अध्ययन हेतु छत्तीसगढ़ राज्य के दो संभाग रायपुर एवं बिलासपुर के तीन जिला रायपुर, जांजगीर-चांपा, बलौदाबाजार का चयन नृजाति बहुल के आधार पर सूचनादाताओं का चयन सहभागी अवलोकन अध्ययन के लिए उददेश्यमूलक निदर्शन पद्वति से किया गया है। नृजातिवृतांतात्मक तथ्यों का संकलन के लिए साक्षात्कार निर्देशिका, साक्षात्कार अनुसूची, समूहवार्ता, केन्द्रिय समूहवार्ता तथा वयैक्तिक अध्ययन जैसे गुणात्मक शोध उपकरणों के द्वारा नृजाति समूह के मुखिया, पुजारी, पांरपरिक चिकित्सक, कलाकारों, धार्मिक विशेषज्ञ, वृद्ध महिला-पुरूष जैसे कुंजी सूचनादाताओं का गहन साक्षात्कार के माध्यम से तथ्यों एवं सूचनाओं का संकलन किया गया है।

परिणाम विवेचना एवं निष्कर्ष:- विमुक्त घुमन्तु/अर्धघुमन्तु नृजाति समूह 'नट' पर अब तक हुये अध्ययनों से पता चलता है कि "नट' शब्द संस्कृत के 'नाट' शब्द से लिया गया है। जिसका अर्थ या उपयोग घुमन्तु कलाबाजी एवं खेल-तमाशा दिखाने वाले

समूहो के लिए प्रयुक्त होता है ।'' दूसरे शब्दों में देखे तो 'नट' का अर्थ नृत्य, नाटक अथवा अभिनय करने से है । रसेल एंड हिरालाल की धारणा है कि 'नट' शब्द जिसका उद्गम संस्कृत के 'नाट' से हुआ है, वस्तुतः घुमन्तु कलाबाजी, खेल-तमाशा दिखाने वाले समूह के लिए प्रयुक्त होता है जो बाँस के सहारे रस्सी पर चलने या खेल दिखाते है अथवा सांपों को प्रशिक्षित कर उनका तरह-तरह के प्रदर्शन करते है । उसके लिए 'नाट' अर्थात् 'नट' शब्द का प्रयोग किया है । (**निरगुणे, 2017 पृ. 74**) "संस्कृत में 'नट' शब्द का अर्थ 'नर्तक' होता है और नट पारम्परिक रूप से मनोरंजन करने वाला कलाबाजी, बाजीगर थे । **(http://en.wikipedia.org.10/02/2022)**[7]'' **Talib (2019)**[8] के अनुसार "नृत्य, नाटक (अभिनय) करना भी है ।'' इस तरह से हम निष्कर्ष के रूप में पाते है कि जो नृजाति समूह खेल-तमाशा, कलाबाजी, करतब, भिच्छावृत्ती, एक स्थान से दूसरे स्थान घुमन्तु हुये अपना जीवन यापन करता है, जिसका कोई स्थायी निवास न हो उसे विमुक्त घुमन्तु/अर्धघुमन्तु नृजाति समूह कहते है । प्रस्तुत अध्ययन से पता चलता है कि छत्तीसगढ़ के विमुक्त घुमन्तु/अर्धघुमन्तु 'नट' जाति का सामाजिक-आर्थिक, राजनैतिक एवं शैक्षणिक स्थिति अन्य जाति समूहों के अपेक्षा निम्न स्तर पर है । नृजाति समूह 'नट' के खेल-तमाशा पर आधुनिकता का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है । पहले 'नट' जाति में खेल-तमाशा परम्परागत रूप से ढ़ोल, थाली, डमरू, कुत्ता, बन्दर इत्यादि के माध्यम से खेल-तमाशा करते थे । लेकिन वर्तमान समय में आधुनिक साऊड बॉक्स नवीन गीत-संगीत के साथ-साथ विभिन्न प्रकार के नवीन खेल-तमाशा, सर्कस करने के साथ-साथ वर्तमान समय में स्थायी बसे नृजाति समूह कृषि मजदूरी एवं व्यापार के साथ युवावर्ग शिक्षा ग्रहण भी करने लगा है । शिक्षा ग्रहण करने के कारण युवावर्ग अपने पैतृक कार्य खेल-तमाशा करने से बहुत से नृजाति युवा कतराने (संकोच करने) लगा है । अर्थात् नृजाति समूह 'नट' अपनी परम्परागत खेल-तमाशा को धीरे-धीरे बिसराने (भूलने) लगा है ।

संदर्भ सूची:-

(1) Census of India.Ministry of Home Affairs, *Government of India. office of the Registrar General & Census Commissioner, India*.2011.censusindia.gov.in. http://censusindia.gov.in /(accessed september 20, 2019).

(2) NCDNST.2008.*National Commission for Denotified, Nomadic and Semi-Nomadic Tribes*.socialjustice.nic.in June 30, 2008.http://socialjustice.nic.in/writereaddata/ UploadFile/ NCDNST2008-v1%20(1).pdf (accessed september 18, 2019).

(3) धारासुरे, व्यंकट.(2020).भारत के विमुक्त एवं घुमन्तू जन-समुदाय.मथुराः जवाहर पुस्तकालय.

(4) नट, अमृतलाल.(2014).छत्तीसगढ़ की घुमन्तु जातियां.रायपुरः सामाजिक जनगणना.

(5) निरगुणे, वसन्त.(2017).मध्य प्रदेश की विमुक्त जातियाँ-जनजातियाँ.दिल्लीः आलेख प्रकाशन.पृ.क्र.70-71.

(6) निरगुणे,वसन्त.(2017).मध्य प्रदेश की विमुक्त जातियाँ-जनजातियाँ.दिल्लीः आलेख प्रकाशन.पृ.क्र.73-74.

(7) http://en.wikipedia.org.10/02/2022.

(8) Talib, MD.(2019).नट समुदाय की स्थितिः एक सामाजिक केस अध्ययन.Journal of Advances & Scholary Researches in Allied Education, 16(6).P.N.2360-2366.

(9) नट, सुरेश कुमार.(2021).अंजोर एक आत्मकथा.मुगेली: बिहारी प्रिंटर्स मुंगेली छत्तीसगढ़. प्रथम संस्करण.